International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 02, No. 01, January - March, 2020, pp.204-208

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. नवप्रभाकर लाल गोस्वामी*
श्रीमती सोनल सिंह**

परिचय

किसी भी देश या समाज के वर्तमान को विकसित एवं भविष्य को उज्जवल बनाने की आधारशिला होती है शिक्षा। शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो पाता है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है और सभ्यता के रथ को आगे बढ़ाता ह। जीवन की उदारता, उच्चता, शारीरिक व मानसिक और भावात्मक विकास तब तक भली प्रकार नहीं हो पाता जब तक वह शिक्षा ग्रहण नहीं करता। समाज में सुख समृद्धि लाने का कार्य भी शिक्षा ही करती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा ''शिक्ष'' धातु में 'अ' प्रत्यय लगने से बना है। जिसका अर्थ है सीखना और सीखाना। अतः शिक्षा का अर्थ सीखने एवं सीखने की प्रक्रिया से लिया जाता है। शिक्षा को अंग्रेजी में Education कहते हैं। अंग्रेजी का यह प्रचलित शब्द Education लैटिन भाषा की दो धातु 'E' और 'Duco' का अर्थ होता है, E का अर्थ होता है बाहर निकलना और Duco का अर्थ होता है। ''मैं नेतृत्व करता हूँ (I Lead) इस मान्यता के अनुसार शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाले शिक्षार्थी की अनर्तनिहित शक्तियों को बाहर निकाला जाता है। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा के विचार प्रकट किये हैं जो अग्रलिखित है।

प्लेटो के अनुसार – ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से जो अच्छी आदतों के द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करती है।''

समस्या की आवश्यकता/औचित्य

शैक्षिक क्षेत्र में जब कोई अनुसंधान कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन की उपादेयता महत्त्व, प्रकृति आदि का औचित्य सिद्ध करना इसलिए आवश्यक है कि इसके द्वारा यह सिद्ध कर सकें कि इस अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगे। इसके अतिरिक्त औचित्य शैक्षिक समस्या की उपादेयता का सिद्ध करने में भी सहायक होता है। प्रस्तुत समस्या के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोणों से इसके औचित्य को निम्न प्रकार से स्पष्ट यिका जा सकता है। कई बार हम देखते हैं कि दो भाई–बहिनों में से भाई तो परिस्थितियों के कारण जल्दी से न तो समायोजन करता है और न ही शैक्षिक निष्पत्ति में उच्च होता है, जबकि बहन का समायोजन बहुत अच्छा होता है और शैक्षिक उपलब्धि भी बहुत उच्च होती है। कई बार उसका उल्टा भी हो सकता है। हम यह नहीं कहते कि बालक तो समायोजन स्थापित करने में असमर्थ रहते हैं तथा बालिकाऐं समर्थ रहती हैं। बालक – बालिकाओं की सामाजिक परिपक्वता में भी भिन्नता पायी जाती हैं। उसकी ये भिन्नताऐं उनके समायोजन एवं शैक्षिक निष्पत्ति को भी प्रभावित करती है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि यह शोध किया जाए कि माध्यमिक स्तर के छात्रों व छात्राओं की इन भिन्नताओं का कारण क्या है? छात्र परिस्थितियों के साथ जल्दी समायोजित होते हैं या छात्राऐं, छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है या छात्राओं की, उनमें कितना अंतर होता है। यह एक विचारणीय प्रश्न है। इस क्षेत्र में मानसिक परिपक्वता पर अधिक शोध

* प्राचार्य, विद्यास्थली महिला शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** यूनिवर्सिटी ऑफ टैक्नोलॉजी, जयपुर, राजस्थान।

हुए हैं और सामाजिक परिपक्वता के क्षेत्र में कुछ ही शोध हुए हैं जिससे शोधकर्त्री को यह प्रेरणा मिली कि सामाजिक परिपक्वता के क्षेत्र में अध्ययन की आवश्यकता है। अभी तक सामाजिक परिपक्वता, समायोजन तथा शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्धित शोध कार्य कम हुए। अतः शोधकर्त्री की समस्या का औचित्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन करना है।

समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक परिपक्वता एवं समायोजन का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन''

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

- **परिपक्वता का अर्थ**

बाल विकास के क्षेत्र में सर्वप्रथम गैसेल (A. Gesell, 1929) ने परिपक्वता शब्द का प्रयोग किया। गैसेल ने परिपक्वता के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि – ''परिपक्वता शरीर की आन्तरिक व्यवस्था के कारण उत्पन्न स्नायुओं और मांसपेशियों की प्रौढ़ता और दृढ़ता है जिस पर बाह्य वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है।'' गैसेल का यह भी विचार है कि विकास की निश्चित अवस्थाओं से पूर्व हो सकते हैं। परिपक्वता की आधुनिक परिभाषाएं निम्न हैं –

  - आइजेनक और साथियों के अनुसार, (H.J. Eysenck, et al. 1972) ''परिपक्वता शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और मानसिक – विभेदीकरण और एकता की वह स्वतंत्र प्रक्रिया है जो विकासात्मक अवस्थाओं में फैली हुई होती है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप ही शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से जीव की विवृद्धि पूर्ण और सुदृढ़ होती है तथा इस प्रकार वह जीव अपने जीवन में अनुकूलन करता है।''

सामाजिक परिपक्वता को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है :–

- **सामाजिक समायोजन की योग्यताः–** सामाजिक परिपक्वता का अर्थ है सामाजिक संबंधों में परिपक्वता ग्रहण करना। व्यक्ति या बालक सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल कर समाज में स्वयं को समायोजित करने की योग्यता ग्रहण कर लेता है। इसके साथ ही वह समाज के अन्य सदस्यों के साथ संबंध स्थापित करके अपने सामाजिक दायरें विस्तृत करता है।
- **सहयोगीः–** सामाजिक परिपक्वता के अंतर्गत सहयोग एक आवश्यक कारक है। सामाजिक परिपक्व व्यक्ति सदा सहयोगी प्रकृति का होगा, दूसरों के साथ मिल–जुलकर कार्य करने की इच्छा उसमें सदा रहती है और वह इस कार्य में प्रसन्नता का अनुभव करता है।
- **निःस्वार्थ भावनाः–** सामाजिक रूप से परिपक्व व्यक्ति निःस्वार्थ भावना से कार्य करता है। वह कभी भी स्वार्थी बनना पसंद नहीं करता। दूसरों के लिए अपनी रुचियों की बलि देने से भी उसे हिचकिचाहट नहीं होती है।
- **सामाजिक अनुरूपताः–** सामाजिक परिपक्व व्यक्ति सामाजिक रीति–रिवाजों के अनुसार कार्य करना पसन्द करते हैं। वे सच्चे मन सामाजिक आदर्शों, नैतिकता और परम्पराओं का अनुकरण करने में प्रसन्नता अनुभव करते हैं।
- **सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने की क्षमताः–** सामाजिक परिपक्व व्यक्तियों में सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने की पूर्ण योग्यता तथा क्षमता का विकास हो चुका होता है। अतः सामाजिक परिपक्व व्यक्ति इन जिम्मेदारियों को भली–भांति पहचान सकता है।

समायोजन

मनुष्य अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए अपने वातावरण तथा परिस्थितियों के साथ समायोजन करता है। यह आवश्यक नहीं है कि समायोजन की प्रक्रिया में सफलता ही प्राप्त करें। समायोजन की प्रक्रिया में दो तत्व होते हैं। एक तो जीव की आवश्यकताएँ एवं इच्छा, दूसरे इन आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाली

परिस्थितियाँ। यह परिस्थितियाँ व्यक्ति के अन्दर भी हो सकती हैं तथा उसके बाहर भी। बालक का व्यक्तिगत समायोजन आज के व्यस्त एवं जटिल जीवन में समस्याजनक बनता जा रहा है। जीवन में प्रत्येक को ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ता है जब वह अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को तुरन्त पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं कर पाता है। यदि वह इस परिस्थिति में समायोजन कर लेता है तो उसका संतुलन बना रहता है परन्तु यदि वह इस परिस्थिति का सामना नहीं कर पाता है तो उसमें असमायोजन उत्पन्न हो जाता है जो कि व्यक्ति के विकास की गति को रोक देता है। इसलिए व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए उसका सुसमायोजित होना आवश्यक है।

शैक्षिक निष्पत्ति

मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाशास्त्रियों तथा दूसरे क्षेत्रों से संबंधित व्यक्तियों के लिए शैक्षिक निष्पत्ति सदैव ही रुचि का क्षेत्र रहा है। प्रशिक्षण अथवा शिक्षण परिणामस्वरूप ज्ञान अथवा कौशल के रूप में व्यक्ति को जो उपलब्धि प्राप्त होती है। वह शैक्षिक निष्पत्ति कहलाती है।

परिकल्पनाएँ

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानकर्त्री ने निम्न परिकल्पनाएँ की हैं –

- उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

समस्या शोध का परिसीमांकन

समस्या का स्वरूप साधारणः अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है क्योंकि प्रत्येक कार्य की अपनी कुछ परिधि एवं सीमाएँ हैं। यदि समस्या की निश्चित परिधि या सीमा होगी तो गहनता से अध्ययन होगा। शोधकार्य पर लगने वाले श्रम, धन तथा समय को कम करने की दृष्टि से भी समस्या का परिसीमन आवश्यक है। इसके अलावा अनुसंधान प्रक्रिया के निश्चित परिणामों तक पहुँचने हेतु तथा अध्ययन को विश्वसनीय एवं वैद्य बनाने के लिए भी समस्या को परिधि में बांधना आवश्यक हो जाता है। समस्या का परिसीमन भौगोलिक दृष्टि से अर्थात् क्षेत्र की दृष्टि से समस्या का निर्धारण करना है।

- शोधकर्त्री ने भौगोलिक दृष्टि समस्या से समस्या के अध्ययन के लिए जयपुर शहर को चुना है।
- शोधकत्री ने बहरोड़ तहसील के छह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों को चुना है।
- इन चयनित विद्यालयों में छात्रों एवं छात्राओं की संख्या अनुपात की दृष्टि से समान रखी गई है। (प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र एवं 20 छात्राएँ)
- इस शोध हेतु सभी विद्यालयों में कक्षा स्तर की समानता की दृष्टि से कक्षा 11 के विद्यार्थियों को लिया गया है।
- शोधकर्त्री ने केवल 120 छात्र–छात्राओं का शोधकार्य हेतु चयन किया गया है।
- शोधकर्त्री ने केवल 60 छात्र व 60 छात्राओं को अपने शोधकार्य हेतु चयन किया गया है।

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श का चयन सम्भावित न्यादर्श चयन पद्धति व यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने समय, श्रम एवं धन की सीमा को ध्यान में रखते हुए इस शोधकार्य में जयपुर शहर के तीन उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों का चयन किया गया है उन विद्यालयों में अध्ययन कर रहे कक्षा 11 के छात्रों तथा छात्राओं को अध्ययन के लिए चुना गया है। न्यादर्श में कुल 120 विद्यार्थियों को लिया गया है जिसमें से 60 छात्र व 60 छात्राएँ हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोधकार्य में मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया है। शोधकर्त्री सामाजिक परिपक्वता का प्रपत्र डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव (जबलपुर वाले) का और समायेाजन प्रपत्र श्रीमति रागिनी दूबे मध्यप्रदेश को प्रयोग में लिया गया है।

परिकल्पना – 1

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर को जानने हेतु सम्बन्धित सारणी –

सारणी संख्या 1

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
छात्र	60	104.85	0.90	2.4602
छात्रा	60	104.48	0.72	

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी संख्या 1 में सरकारी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन को दर्शाया गया है। सारणी देखने से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यार्थियों के छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 104.85 तथा प्रमाणिक विचलन 0.90 प्राप्त हुआ है जबकि छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 104.48 तथा प्रमाणिक विचलन 0.72 प्राप्त हुआ है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 2.4602 प्राप्त हुआ है। यहाँ स्वतंत्रता के अंश $(df)= N_1 + N_2 -2$ $60 + 60 - 2 = 118$

118 के स्वतंत्रता के अंशों पर सार्थकता के लिए t का आवश्यक मान

.05 % विश्वास के स्तर पर = 1.98

.01 % विश्वास के स्तर पर = 2.63

यहा t का प्राप्त 2.4602 है जो कि डी.एफ. 118 पर दिए गए सारणी मूल्य .05 स्तर 1.98 से अधिक है अतः परिकल्पना में सार्थक अन्तर देखने में आता है। अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना को 0.05 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना – 2

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर को जानने हेतु सम्बन्धित सारणी–

सारणी संख्या 2

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
छात्र	60	65.13	5.73	0.4134
छात्रा	60	64.68	6.18	

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी संख्या 2 में सरकारी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन को दर्शाया गया है। सारणी देखने से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यार्थियों के छात्रों के समायोजन का मध्यमान 65.13 तथा प्रमाणिक विचलन 05.73 प्राप्त हुआ है जबकि छात्राओं के समायोजन का मध्यमान 64.68 तथा प्रमाणिक विचलन 6.18 प्राप्त हुआ है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.4134 प्राप्त हुआ है। यहाँ स्वतंत्रता के अंश $(df)= N_1 + N_2 -2$ $60 + 60 - 2 = 118$

118 के स्वतंत्रता के अंशों पर सार्थकता के लिए t का आवश्यक मान

.05 % विश्वास के स्तर पर = 1.98

.01 % विश्वास के स्तर पर = 2.63

यहां t का प्राप्त 0.4134 है जो कि डी.एफ. 118 पर दिए गए सारणी मूल्य .05 स्तर 1.98 से अधिक है अतः परिकल्पना में सार्थक अन्तर देखने में आता है। अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना को 0.05 व 0.01 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष

करलिंगर के अनुसार, ''अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए दत्तों का संकलन, विश्लेषण, व्याख्या के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत करना अनुसंधान का महत्वपूर्ण चरण है ताकि प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर समस्या के लिए उपयोगी सुझाव तथा भावी अनुसंधान के लिए आयाम प्रस्तुत किये जा सके। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए निष्कर्षों का प्रस्तुतीकरण किया है –

- **परिकल्पना – 1**

सरकारी विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 104.85 तथा प्रमाणिक विचलन 0.90 प्राप्त हुआ है जबकि छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 104.48 तथा प्रमाणिक विचलन 0.72 प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना में सार्थक अन्तर देखने में आता है। अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना को 0.05 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

- **परिकल्पना – 2**

सरकारी विद्यालयों के छात्रों के समायोजन का मध्यमान 65.13 तथा प्रमाणिक विचलन 05.73 प्राप्त हुआ है जबकि छात्राओं के समायोजन का मध्यमान 64.68 तथा प्रमाणिक विचलन 6.18 प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना में दोनों प्रकार के प्रतिक्रिया कालों में सार्थक अन्तर देखने में नहीं आता है। अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना को 0.05 व 0.01 विश्वास के स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

शोध का शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोधकार्य का कार्य तब तक अपनी सार्थकता की नहीं बताता जब तक कि शोध की कोई उपयोगिता न हो। प्रत्येक शोध अपने अन्दर कुछ न कुछ शैक्षिक निहितार्थ अवश्य रखता है। शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोध सर्वेक्षणात्मक है जो कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन का शैक्षिक निष्पति पर कैसे और क्या प्रभाव पड़ता है का अध्ययन करना है। यह शोध विद्यार्थियों की छात्र छात्राएँ सामाजिक रूप से कितने परिपक्व होते हैं और वह समाज व विश्वास में कितना समायोजन कर पाते हैं और उनकी शैक्षिक निष्पति पर इनका कितना प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

⇒ गैरेट हेनरी ई. – शिक्षा एवं मनोविज्ञान सांख्यिकी डेविड मैन के कम्पनी, लुधियाना।

⇒ वर्मा रामपाल सिंह – अधिगम विकास के मनोसामाजिक आधार साहित्य प्रकाशन, आगरा

⇒ बघेला हेतसिंह – शिक्षा मनोविज्ञान, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।

⇒ सुखिया ए.पी. मेहरोत्रा – शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व।

❖◆❖